

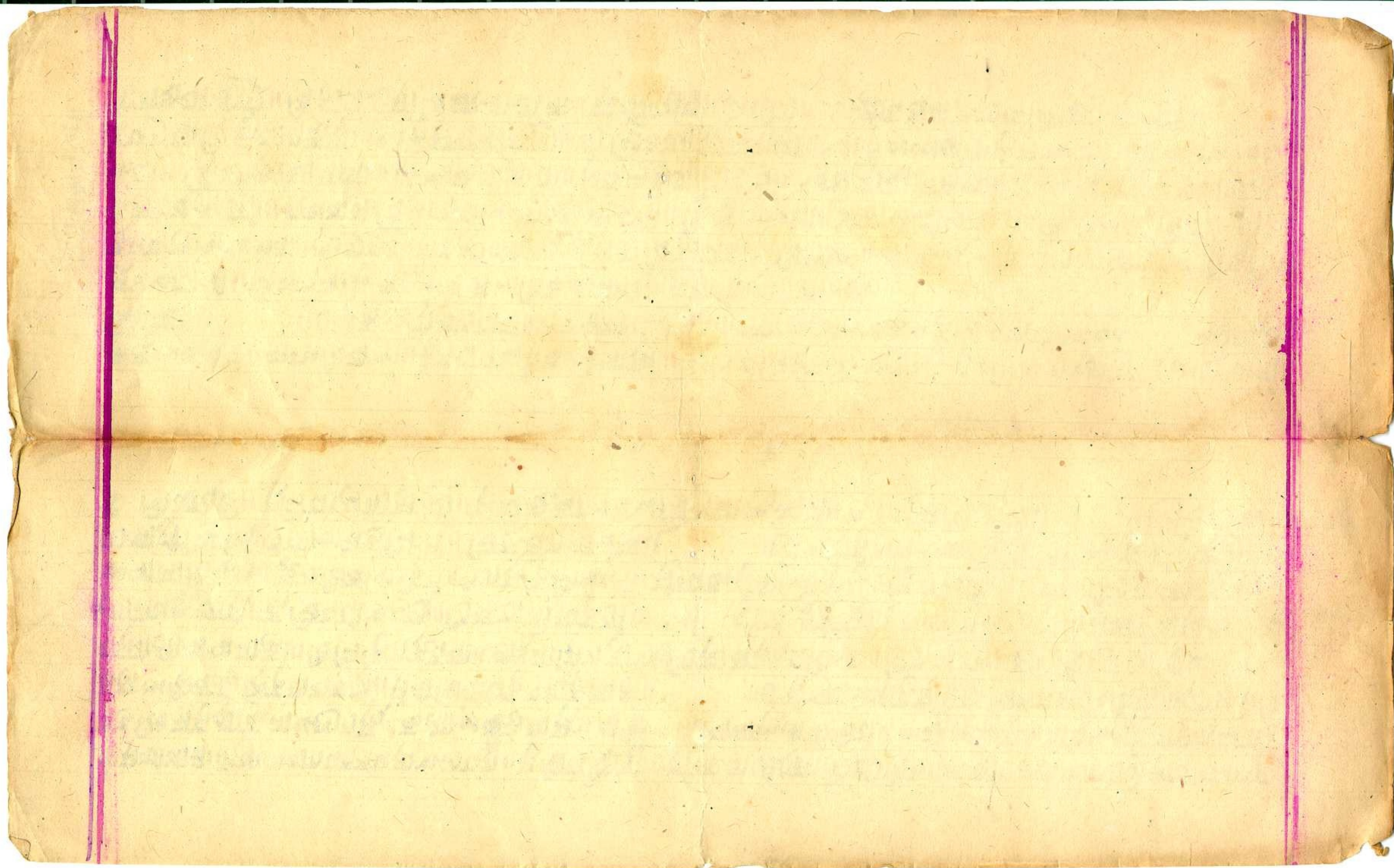
विष्णु ॥ सृज कविजका ॥ सदक सुक का सुजातं सदातं ॥ ॐ गगनमकरी इष्टं ॥ नप सिधतमपि ॥ लोकनाथ ॥ यादस्य
 माकाल ॥ रथगजारि ॥ विजिनया वाग्मति संगमिन् ॥ कल्याणकृपासूक्त विदपी नजगां ॥ विरुगा नोम्यहं गा ॥ ॐ ॥ उं नमोदाननी
 लक्ष्मा ॥ ॐ न विर्यमहं कानपाजगतं ॥ सोगतं त्याः वहुवुं कवेहाज ॥ लाकावर्जतं ॥ सखधर्मापद संसृष्टं ॥ ॥
 उं कृदनागमधिजाडी ॥ कूलिकसमरिधगा ॥ यकिजकाशा ॥ लाकानाएडहगा समरवडपुपि ॥ आगीजावेरुजाग ॥ शासामकाश
 एशु ॥ ॐ उं कृमिजएवल्कीलकानामहं ॥ कल्याणवकृपासू ॥ क ॥ उं नमामिसोगतं ॥ विनलसंतु विगानरास्रजं ८
 सहस्रसूर्यजाविषं ॥ ससाककाठि निर्मलं ॥ सजामकृपमंडजागगतं ॥ मुकुमतजसं ॥ सहचनमिचकिताधिपुर्मपा
 लिचरिगं ॥ एजामिलाकनायकं ॥ सखधर्माजगनासकं ॥ जलाविपगएयानुकं ॥ एवानवपूजातकं ॥ पुवृष्टं पंकजासनः
 विवृष्टवाधिकाजलं ॥ तिलाकलाकरावनं ॥ उं उं रुयेकपावनी ॥ ॐ पात्रुतंसर्वपादकं मलधजगिजा ॥ वजपानी

उं हित ॥ लाकानाजकलार्थ ॥ पुनजपीकलार्थ ॥ कालगालेवहव ॥ अमानसर्वधजाक ॥ विनवलतनय ॥ तुलकाश्रयध
 न ॥ कल्याणकृपासू ॥ क ॥ उं यस्त्वधर्मादिमर्थ ॥ सकलजिनसुखसंसृतं खेरुकेतु ॥ ॐ यारवावाधिहनु सुदन्तः दुषीः
 नवागतावाधिजाड ॥ मेरियंस्थपयित्वा ॥ पुम्दिगमनसासासनचारिष्यच ॥ मायागर्हपुविगे इधुविमलहितं ॥ जलवृ
 हपुवर्णं ॥ ॐ उं वाद्यं मंरुं वरुं ॥ यजनसुखजकं कामीगीकृपुवधं ॥ कृत्वाप्राहमहातं ॥ कविवलमकजा ॥ मंरुं
 देवसुतापि ॥ सासलधजयएवी ॥ सकलगुलपुष्टं ॥ प्राफगहसलका ॥ कल्याणकृपासू ॥ वा ॥ उं पुलमामीजिन
 सुगतं ॥ सत्तुतपनीयहिजलध ॥ जीलकवी ॥ यजवकुविदधिगपानिगजी ॥ ससृजासुलमानुषः पापहज ॥ ॥
 उं मत्स्याकाजहिलासि ॥ सकलवर्लविषं रिनामाससत्वा ॥ सालकालं कूलिललददः दरिलकायापियाख्याया ॥ यासा
 जिकास्यालकूलिनुधज ॥ ॐ तिसमरुधितजीगार्थ ॥ जागसू ॥ कल्याणकृपासू ॥ ॥ उं वं नुम्नी न सुगतं ॥ वरुं रिह
 नार्थ ॥ संवाधिपाजगमिग ॥ अनपाजनार्थ ॥ दानादिपाजमिगसंरुदधलवष ॥ संवाधितलमसमं एवगारिलदं ॥ ॥ ८

ॐ सञ्जामात्रा शिवा नायक पतनपसा भगवतु ॥ सुविचक्रिग गराख्य वा दार्ष्टमिडा गित ॥ स्वापम्य सचा ॥ गं ॥ सादीन गगर
 वडु शिव लहलोक नाथगुगु ॥ कल्या लवक्यासु ॥ क ॥ ॐ नमस्तुलाकाधिपं ॥ भक्त गजं ॥ सधर्मपंक लहलसक गाय ४
 वल ॥ लिवड ॥ रिहं गायगुयं ॥ संवाचिदापह गमाह कालं ॥ ॐ संखद ॥ सहर्षासिद मिगमसुतं ॥ विक्रमापाफ सिद्धि
 यस्मात्ताक ॥ गज ॥ विनिहित हृदया ॥ पांडुगसिग त्यगर्ह यसाय स्वापयित्वा ॥ निज पुनमगस ॥ दि कुमसा रि ॥ अन ॥ कः
 ल्यानव कृयासु ॥ क विदपी नलग ॥ शिष्ट गानो मर्ह गी ॥ न ॥ ॐ वन्दु हं गल गृपं ॥ गनु विदु रवं ॥ मय हय सखा व ॥ व
 ध नामा दिवु ॥ कृत विवा ध किर्न ॥ गज साह नि ॥ सम्पक संवाचि मुर्ति ॥ गुगु लविल सिग ॥ पंचज्ञान क हनु ॥ ने
 जाकाली निज ॥ गगल वडु नि ॥ चिह्न वेगं नयेत्य ॥ ॐ नवाहं नम ॥ भक्त सिंह मुनी ॥ स्वयं र कृत पाग
 न निष्पदेव ॥ सुनेपाल माहात्म्य ॥ सम्पक काल गधनेय पा ॥ ला ॥ ॐ नानु ज कि तुं च ॥ ॥ श्री धर्म धनु मना स

कलू भवता जे ॥ नागभदिवा ॥ हृदय पीक जं कलिकास्थ ॥ नेल जं निरूपमं ॥ खसमं मह ॥ जोति ॥ भद्रूपमसमं ॥ पुनगाः
 मिनिन्य ॥ ॥ ॐ वृ ॥ लसुत गृपाय ॥ तेज गृपाय धे सुव ॥ तमात्रूपमह ॥ भय ॥ हान लपाय नम ॥ ॥ ॐ वं व
 लूप धजली ॥ निज जं नि लंकु ॥ ननादिके नंगक ॥ नना सिल्वगुपदाम्पुड ॥ ॥
 पुनवालः ॥ धधधका ॥ धुगु पुकालं इसा ॥ जगवर्त्म महा वि हा जइसा विज्ञाना ॥ श्री भक्त मुनी रगवानं ॥ उपगुफ रिदु पिस
 कलदव लाकपी ॥ अथवा अर्षिलाकपी ॥ अरुल लाकपी ॥ सिद्वाग लपी ॥ जठा धजी धयापी ॥ किं नलाकपी ॥ गंधवे ला
 कपी ॥ डिं मन्षया गजा ॥ अचक जाजापी ॥ सकल पुजालाकपी ॥ धपी सुकल मुंका ॥ श्री भक्त मुनी रगवानं इसां
 उपगुफ रिदु याग इसा ॥ ध हं सधर्म याग ॥ वा धिचर्या हान इसा ॥ ध किं ल ॥ ध वल्लु सभजीत ॥ वे चवर्क धक
 नाम इया चा ॥ वि हा जइसा विज्ञाना वा ना ॥ सर्व सर्व पा लिपीत ॥ अह्लादयका ॥ न्यका विज्ञाना जान ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



१३ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुः कृष्णः कान्तः ॥ भक्तसिंहाम्नीय ॥ इति प्रसिद्धं सूत्रं संधे ॥ सद्यमाना जनाद्य
कुवलयदलनगा ॥ जहन्मयकृष्णं ॥ समस्तवहीतु निष्ठं सर्वलाकहितार्थं ॥ यदेवासंनिभं अविलोकनकम
ज ॥ मंजुलयावज्जका ॥ पाताज्जलज्जगत् ॥ कलमलिकिजलध्वजसर्वान्धकाजा ॥ केजासंप्रविजासेपुमृदि
गहदया ॥ यवविद्याधज्जका ॥ सैमाकंदाजलत्तं ॥ मनिवजवचनं ॥ लभतुमायांतुसर्वं ॥ गंधर्वमंजुलारासुजः
विर्लललित ॥ स्वासनं यजमंजु ॥ दिव्यदेवयुगायैवजकुवकजले ॥ पीयमानायाजालि ॥ एताडसागजा
क ॥ मलयजिजित्तं ॥ यवसिद्धासुजका ॥ सैमाकंदाजलत्तं ॥ मनिवजवचनं ॥ लभतुमायांतिसर्वं ॥ उक्तेयादिव्य
जृपा ॥ समस्तस्वनिजगत् ॥ सुप्रलसुद्धयपा ॥ यकाश्चदिव्यवर्गः सृजनलजगत् ॥ गार्हसाकिञ्चजका ॥ गंधर्वा
दिप्रमृत्वा ॥ पुमृदिगहदया ॥ यवविद्याधज्जका ॥ सैमाकंदाजलत्तं ॥ मनिवजवचनं ॥ लभतुमायांकीसर्वं ८

मंभुल ॥ कृपलवम्यक नागपुष्प ॥ गंभुसु मेजगु जयनु नकुकुमाध ॥ जलाहु माकनक ना निवर्द्ध कायाः
 आयाहि पुष्पसूजगा ॥ प्रवनाय धर्म ॥ आयाहि दवमनूजा ॥ पुलेकि ननु ॥ मक्रोदय ॥ प्रवजधर्म कृताधिका
 जा ॥ वेदिववपु मम भूषा निमिरु रग ॥ यगल्यका भितसह सुवलयधर्म ॥ आयाका सुभुका मा ॥ असुलसू नलन
 गसिद्धिगं धव नाग ॥ उका कुला भुकि नजीनु ॥ गजुह गीहजा ॥ मक्रुं क्रादिदवा ॥ पूजापे वा पुयात्र ॥ गिरु
 वननमिर्ग ॥ मयनी इल्लहामं ॥ रगव्साह वावयामि ॥ पुलमिग सित्रसातं ॥ तुमाहायानसूतं ॥ ॐ ॥ ८

आभा मरुवाधि
 162
 ASHA ARCHIVES

आभा मरु
 162 I
 ASHA ARCHIVES